7 . SEP 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट–XV/VII (प्रश्नपत्र–1)

DTVF/19(N-M, J-S)–HL-**HL15/7**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Devendra Prakash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 7 5 07/09/19

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

1	1	3	4	5	1	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): [signature]

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताएँ

संस्कृत से हिन्दी की विकास यात्रा में अपभ्रंश एक महत्वपूर्ण संक्रमण अवस्था रही है, जिसका विकास संस्कृत के शब्दों के विकृत रूप में प्रयोग होने के कारण हुआ।

व्याकरणिक विशेषताएँ

(क) संज्ञा एवं कारक व्यवस्था :- अपभ्रंश में अनेक प्रयोग ऐसे होने लगे थे, जो या तो निर्विभक्ति रूप हो अथवा एक ही विभक्ति 'हि' का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - बिरह तपाइ तपाइ । (निर्विभक्तिक)

चरणोदक ले सिरहिं चढ़ावा । (एक विभक्ति)

सभी प्रतिपादिक प्रायः स्वरांत होने लगे थे। जैसे - जगत् > जग

संस्कृत की आठ विभक्ति की बजाय केवल तीन विभक्ति रूपों में प्रयोग की परम्परा विद्यमान थी। साथ ही इस काल की प्रमुख विशेषता संबंध कारक के लिए का तथा कर्म के लिए दि' का प्रयोग है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) लिंग व्यवस्था - संस्कृत के तीन लिंगों की बजाय अपभ्रंश में केवल दो ही लिंग पाये जाते थे। नपुंसक लिंगी शब्दों का समावेश इन्ही दो लिंगों में हुआ।

(ग) वचन व्यवस्था - अपभ्रंश में केवल दो ही वचन विद्यमान थे। द्विवचन स्वभावतः बहुवचन में सम्मिलित हुआ।

(घ) सर्वनाम - इस दौरान अनेक सर्वनाम प्रयुक्त हुये जो वर्तमान सदृश है।

प्रथम पुरुष - म्हार, मुंज, हमार, हौं
मध्यम पुरुष - तुहार, तुम्ह, तू
अन्य पुरुष - उन्ह, जिन्ह

(च) विशेषण - इस काल में संख्यावाची विशेषणों का पर्याप्त विकास हुआ। जैसे - दस, बारह, बीस, इग्यारह, एक्क आदि।

(छ) काल संरचना → इस दौरान भूतकाल के लिए हिन्दी की कृदन्त परम्परा तथा अन्य के लिए संस्कृत की तिङन्त परम्परा प्रचलित रही।

क्रिया के स, ह तथा ब रूप प्रचलित हुये जैसे - चलिसई, चलिहिय, चलब।

(ज) क्रिया व्यवस्था - इस काल में नवीन धातु रूप प्रयुक्त हुये। जैसे - उठ्ठ, बोल्ल आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताएँ

ब्रजभाषा पश्चिमी हिन्दी की एक उपभाषा है, जिसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है। रीतिकाल में इसने अखिल भारतीय साहित्यिक रूप धारण किया और शृंगार की प्रधान भाषा बनी।

व्याकरणिक विशेषताएं

संज्ञा → अवधी के विपरीत ब्रजभाषा में संज्ञा का एक ही रूप पाया जाता है तथा प्राय: आकारान्त रूप है।

सर्वनाम -
उत्तम पुरुष - हौं, मैं, मोसो, हमरा, हम
मध्यम पुरुष - तोसो, तुम, तू
अन्य पुरुष - वह, वो, उनको

कारक व्यवस्था - हिन्दी के मानक रूप की भाँति ही कारक व्यवस्था पाई जाती है।

कर्ता - ने	सम्प्रदान - के लिए
कर्म - को, हि	अपादान - से, सो
करण - से, सो	संबंध - का के, रा, रे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

<u>विशेषण</u> - ब्रजभाषा श्रृंगार की प्रधान भाषा है। अतः अनेक विशेषणों [(गुणवाचक) तथा (संख्यावाचक)] का विकास हुआ।

<u>लिंग</u> - स्त्रीलिंग प्रायः <u>इकारान्त</u> तथा <u>आकारान्त</u> होते हैं। जैसे - राति
- राधा

<u>वचन</u> - ब्रजभाषा में भी दो ही वचन पाये जाते हैं तथा वचन परिवर्तन के लिए प्रायः <u>अँ</u>, <u>एँ</u>, अथवा <u>याँ</u> का प्रयोग होता है।

जैसे - रात > रातेँ
बात > बातें
नदी > नदियाँ

ब्रजभाषा की भाषिक एवं व्याकरणिक विशेषताएँ निम्न उदाहरण में द्रष्टव्य है।-

"आयो घोष बड़ो व्यापारी,
लादी खेप गुन ज्ञान जोग की,
ब्रज में आन उतारी।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मारवाड़ी' बोली

मारवाड़ी राजस्थानी उपभाषा वर्ग की सर्वाधिक बोली जाने वाली ब बोली है, जिसका विकास महपदेशीय अपभ्रंश तथा डिंगल से माना जाता है।

यह राजस्थान के पश्चिमी हिस्से में मुख्यः बोली जाती है किन्तु समुदाय की उपस्थिति राष्ट्र में सर्वत्र है।

विशेषताएँ

ⓐ <u>ध्वनि संबंधी</u> → यह बोली मूलतः 'ट' वर्ग बहुला तथा ओज गुण से सम्पन्न है। यह प्रायः ओकारान्त बोली है। जैसे - हूवको, तारो

इसमें <u>'ल' का उच्चारण मूर्धन्य 'ळ'</u> तथा <u>'न' का उच्चारण 'ण'</u> में किया जाता है, तथा ~~यह~~ इसमें महाप्राण शब्दों का अल्पप्राणीकरण किया जाता है।

<u>जैसे</u> - बालक > बाळक

पानी > पाणी

हाथ > हात

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणिक विशेषताएँ

① स्त्रीलिंग शब्द प्रायः इकारान्त होते हैं।
जैसे - लड़की,

② वचन में परिवर्तन के लिए प्रायः 'आँ' का प्रयोग किया जाता है।
जैसे - बात > बातों

③ विशेषण - इसमें मुख्यतः आछो, घणो, चोखो, आदि विशेषण प्रयुक्त किये जाते हैं।

④ सर्वनाम - उत्तम पुरुष = म्हारो, म्हाको, हमारो
मध्यम पुरुष = थाको, तेरो, तुम्हारो
अन्य पुरुष = वो, उनकी, वह

⑤ कारक व्यवस्था -

कर्ता	ने, नै	सम्प्रदान	के लिए
कर्म	को, नूं	संबंध	का, के, की, रा, रे, री
करण	से, सूं		

मारवाड़ी बोली की भाषिक एवं व्याकरणिक विशेषताएं निम्न उदाहरण में द्रष्टव्य है -
"हे री मैं तो दरद दीवाणी, मेरो दरद न जाणे कोय
घायल की गति घायल जाणै, और न जाणै कोय।।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'भोजपुरी' का साहित्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भोजपुरी ~~पूर्वी~~ बिहारी हिन्दी उपभाषा वर्ग की सर्वाधिक बोली जाने वाली बोली है। ~~जिसका~~ विकास मागधी अपभ्रंश से माना जाता है।

भोजपुरी न केवल बिहार, झारखंड तथा पूर्वी उत्तरप्रदेश में बोली जाती है, बल्कि यह मॉरीसस, सूरीनाम जैसे विदेशी राष्ट्रों में भी बोली जाती है।

भोजपुरी साहित्य की दृष्टि से काफी समृद्ध बोली रही है और भारत ही नहीं देश विदेश में इसमें पर्याप्त साहित्य रचा गया है।

मूलतः सामाजिक संवेदना तथा जीवन के महत्वपूर्ण अंशों को दर्शाने वाला साहित्य रचा गया है। कवियों द्वारा सामाजिक विद्रूपताओं पर चोट का प्रयास किया गया है।

ऐसा ही एक प्रयास निम्न उदाहरण में कवि द्वारा दहेज प्रथा पर चोट के माध्यम से किया है -

"बाप देखी बेटा के बोली लगावेल बा।
देवे वाला भी खुशी से सिर झुकवेल बा।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भोजपुरी साहित्य न केवल भारत बल्कि विदेशी भूमि पर भी रचा गया है। भोजपुरी साहित्य ने हिन्दी साहित्य के एक अंग के रूप में नवीन विषयवस्तु एवं भावामी आयाम प्रदान किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'गढ़वाली' बोली

गढ़वाली पहाड़ी हिन्दी उपभाषा वर्ग की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बोली है, जिसका विकास खस अपभ्रंश से माना जाता है।

आरंभ में गढ़वाली बोली पर अनार्य तत्वों का अधिक प्रभाव था किन्तु ब्रजभाषा तथा राजस्थानी के प्रचार से इसमें आर्य तत्वों का समावेश हुआ।

यह बोली हिमाचल प्रदेश के गढ़वाल हिमालय के क्षेत्र के समीप के जिलों में बोली जाती है, जिसके प्रयोक्ता सीमित है।

ध्वनि संबंधी विशेषताएँ

→ इस बोली पर पंजाबी भाषा का प्रभाव होने के कारण अनुनासिकता की प्रवृत्ति अधिकपाई जाती है।

जैसे - पैंसा, दैंत, आदि

व्याकरणिक विशेषताएँ

→ व्याकरणिक आधार पर भी यह बोली काफी परिपक्व दिखाई देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ एकवचन को बहुवचन में परिवर्तित करने के लिए 'ऊं' का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - घोड़ा > घोड़ूं

→ कारक व्यवस्था

कर्ता - ले

कर्म - कुणि, कर

करण - ते, थै

गढ़वाली बोली की भाषिक एवं व्याकरणिक विशेषताएं निम्न उदाहरण द्वारा समझी जा सकती है -

" बरखा लग्गी बरसणा,
ठंडू ए दा जोर।
धुक-धुक धुटै कम्पणी
कि करधा कमजोर।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) खड़ी बोली के उदय एवं विकास में कौन-से तत्त्व सक्रिय रहे हैं? विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की महत्वपूर्ण बोली है. जिसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है। वर्तमान में मानक हिन्दी का विकास खड़ी बोली से माना जाता है।

खड़ी बोली के आरंभिक उदाहरण सिद्ध-नाथ साहित्य में उपस्थित है। उनके पश्चात् खुसरो के काव्य में तथा संतकाव्य में खड़ी बोली विकसित अवस्था में दिखाई देती है किन्तु का खड़ी बोली का वास्तविक विकास 19 वीं सदी में हुआ।

विकास प्रक्रिया में सक्रिय तत्व

(क) आधुनिकता का आगमन - ब्रिटिश आगमन के साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान तथा मानवीय मूल्यों का भारत में आगमन हुआ। इन नवीन तत्वों का समावेश न तो अवधी के औदात्यपूर्ण के साथ हुआ और न ही ब्रजभाषा की शृंगारिकता के साथ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधुनिक तत्वों ने एक नवीन भाषा की अपेक्षा रखी तथा उसकी पूर्ति खड़ी बोली ने की।

(ख) सामाजिक प्रकृति - खड़ी बोली दक्खिनी हिन्दी के समय से ही सामाजिक प्रकृति धारण कर चुकी थी। आधुनिकता के आगमन ने इस सामाजिकता के महत्व को पहचाना।

(ग) राजनीतिक कारण - ब्रिटिशों द्वारा भारत में शासन व्यवस्था चलाने के लिए आम जन की भाषा को फोर्ट विलियम कॉलेज में महत्व प्रदान किया गया। इससे खड़ी बोली का साहित्यिक एवं क्षेत्रीय जनाधार मजबूत हुआ।

(घ) धार्मिक कारण - ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए खड़ी बोली को चुना। इसी क्रम में कोलब्रुक ने बाइबिल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का खड़ी बोली में अनुवाद किया।

ईसाईकरण के बढ़ते प्रभावों को कम करने के लिए भारतीय सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन में भी खड़ी बोली को महत्व प्रदान किया। राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती ने खड़ी बोली के विकास में भूमिका निभाई।

(ग) <u>पत्र-पत्रिकाएँ</u> - विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के आगमन ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार को महत्व पूर्ण बढ़ावा दिया। <u>उदन्त मार्तंड</u> के प्रकाशन के बाद खड़ी बोली में अनेक समाचार पत्रों का सम्पादन किया गया।

(घ) <u>भारतेन्दु काल</u> - भारतेन्दु मंडल ने हिन्दी के विकास में भूमिका निभाई। उन्होंने गद्य के लिए खड़ी बोली का प्रयोग प्रारंभ किया। जिसके धीरे-धीरे पद्य में भी इसका प्रयोग प्रारंभ हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

20 वीं सदी के आरंभ में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका का सम्पादन संभाला और भाषीय अनुशासन पर बल देते हुये खड़ी बोली को साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में संस्कृत की परम्परा के विपरीत केवल दो ही लिंग पाये जाते हैं - पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग।

नपुंसक लिंग का समावेश इन्हीं दो लिंगों में हुआ है।

लिंग पहचान के नियम

हिन्दी में लिंग के पहचान के नियम लोकप्रचलन के आधार पर निर्धारित किये गये है।

पुल्लिंग की पहचान मुख्यतः अकारान्त तथा आकारान्त शब्दों से होती है, जबकि स्त्रीलिंग की पहचान इकारान्त शब्दों से होती है।

जैसे - टमाटर | राम
भिंडी | लड़की

~~लिंग परिवर्तन के~~ इसके अतिरिक्त कई परसर्ग है, जो स्त्रीलिंग का निर्धारण करते है।

जैसे - याँ - चिड़ियाँ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

'नी' - शेरनी

इन - बाघिन

आइन - ठकुराइन

लिंग परिवर्तन के नियम

→ पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग का निर्माण करते समय निम्न परिवर्तन किये जाते है.

अ > आ = राम > रमा

आ > ई = लड़का > लड़की

अ > नी प्रत्यय = शेर > शेरनी

इन प्रत्यय = बाघ > बाघिन

इयाँ का प्रयोग = बूढ़ा > बुढ़ियाँ

आइन का प्रयोग = ठाकुर > ठकुराइन

सीमाये

→ नपुंसक लिंगी शब्दों के लिंग का निर्धारण करते समय याद्दृच्छिकता की स्थिति उपस्थित होना। जैसे - टमाटर, ट्रक - पुल्लिंग
बस, भिंडी - स्त्रीलिंग

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ अन्य भाषाओं के कई शब्द जो मूलतः पुल्लिंग है, हिन्दी मे स्त्रीलिंग माने जाते है।

जैसे - आत्मा
- पाठशाला

→ पदनाम संबंधी दोष -

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री के लिए स्त्रीलिंगी शब्दों की अनुपस्थिति।

→ विशेषण से संबंधित दोष

काला घोड़ा > काले घोड़े
काली घोड़ी > काली घोड़ियाँ

सारांशतः स्पष्ट है कि मानक हिन्दी में लिंग व्यवस्था सामान्यतः परिपक्व है, किन्तु इसमें कुछ दोष भी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिंदी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों के योगदान का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दक्खिनी हिन्दी पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की महत्वपूर्ण बोली है, जो दक्खन क्षेत्र, कर्नाटक के बीजापुर, गोलकुंडा जैसे क्षेत्रों में प्रयुक्त की जाती है।

मध्यकाल में जब अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य अभियान तथा मुहम्मद तुगलक द्वारा राजधानी में परिवर्तन किया गया, तब दक्खनी हिन्दी का विकास हुआ।

वस्तुतः मराठी, कन्नड़ तथा तेलुगु से अन्तःक्रिया द्वारा एक नवीन भाषा का विकास हुआ, जो बाहरी कलेवर (लिपि) में फारसी, व्याकरणिक ढाँचे में खड़ी बोली तथा प्रकृति में सामासिक थी।

आदिल शाही वंश का योगदान

दक्खिनी हिन्दी के विकास में आदिलशाही राजवंश का महत्वपूर्ण योगदान रहा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। इनमें इब्राहिम आदिलशाह स्वयं एक कवि था। उसने अनेक कवियों को संरक्षण प्रदान किया।

आदिलशाह वंश ने ख्वाजा बंदेनवाज, वली दकनी तथा मुल्ला वजही जैसे कवियों को संरक्षण प्रदान किया।

इन कवियों ने अपनी साहित्यिक सूक्ष्मता तथा विशिष्टता का परिचय दिया और दाक्खिनी हिन्दी को महत्वपूर्ण साहित्य प्रदान किया।

द्रष्टव्य है -

→ "मैं आशिक उस पीव का,
जिसने मुझे जीव दिया।"

→ "जिसे इश्क का तीर कारी लगे
उसे जिन्दगी क्यों न भारी लगे।"

सारांशत: स्पष्ट है कि आदिलशाही

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शासक इब्राहिम आदिलशाह ने स्वयं कवि रूप में दक्खिनी का विकास किया तो साथ ही कई कवियों को संरक्षण प्रदान कर इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) दिनकर की कविता में ओज

दिनकर राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख कवि है, जिनकी कविताओं में ओज तत्व आद्यन्त विद्यमान रहता है। ओजत्व की अधिकता उन्हें क्रांति चेतना से युक्त करती है।

1970 के दशक में राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत कर सम्पूर्ण क्रांति के लिए उनका आह्वान उनके ओजत्व की श्रेष्ठ उपलब्धि है। उन्होंने नारा देते हुये कहा कि-

"सदियों की ठंडी बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"

दिनकर मूलतः मार्क्सवाद से प्रभावित कवि है। अतः शोषित वर्ग को जाग्रत करना तथा अधिकारों के प्रति आवाज उठाने के लिए तैयार करना उनके ओजत्व को दर्शाता है-

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

" जब तक मनुज - मनुज का यह सुखभाग नहीं सम होगा
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा।"

दिनकर केवल सामाजिक चेतना तक ही सीमित नहीं रहते बल्कि वे कुरुक्षेत्र कविता में अन्याय के प्रतिकार के लिए साहस पूर्वक लड़ने का आह्वान करते है -

वे उनकी ओज क्षमता मानव को भाग्य के भरोसे रहने की बजाय स्वयं उठकर सर्वस्व प्राप्ति के लिए प्रेरित करती है -

" जीवन उनका नहीं, युधिष्ठिर,
जो उससे डरते है,
वह उनका जो निर्भय है,
चरण रोप लड़ते है।"

सारांशतः स्पष्ट है कि दिनकर की कविताओं में ओजगुण मानव, समाज तथा राष्ट्र चेतना का उद्बोधक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) शृंगारिकता के धरातल पर रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त कविता का अंतर

रीतिकाल मुख्यतः वैहिक शृंगार तथा भोग मूलक प्रेम का काव्य है। जिसकी मुख्य प्रवृत्तियाँ रीतिबद्ध, रीतिमुक्त, रीतिइतर काव्य में उपस्थित है, किन्तु रीतिमुक्त कुछ अपवादों से युक्त है।

रीतिबद्ध	रीतिमुक्त
→ इस विचारधारा से युक्त कवि प्रेम को दैहिक तथा भोग मूलक वस्तु मानते है।	→ इस विचारधारा के कवि प्रेम को आत्मिक तथा संवेदना का विषय मानते है।
जैसे - 'अंग-अंग नग जगमगति दीप शिखा सी देह।"	जैसे- 'अति सूधो है सनेहो को मारग। जहाँ नेकू सयानप बाँक नही।"
→ इस विचारधारा के कवि शृंगार को ही केवल साधन एवं साध्य मानते है।	→ इस विचारधारा के कवि शृंगार को मुक्ति का साधन मानते है तथा आध्यात्मिकता से जोड़ते है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

→ इस काव्यधारा के कवि विरह श्रृंगार की मार्मिकता को नही पहचानते तथा केवल दिखावटी विरह उपस्थित है।

जैसे - 'इत आवत उत चलि जात चली छ-सातक हाथ चढ़ि हिंडोरे सी रहे। लगी उसासनि साथ।"

→ इन कवियों का विरह इहलौकिक है

→ इस काव्य धारा के कवि प्रेम के पीर से युक्त है, जो विरह की मार्मिकता को पहचानते है तथा अनुभव करते है

जैसे- " उजरनि बसी है. हमारी अखियानी देखो

→ इन कवियों का विरह पारलौकिकता को भी धारण करता है

जैसे -

" ऐरी रूप अगाधे राधे,
राधे, राधे, राधे राधे
तेरी मिलिवे को ब्रजमोहन
बहुत जतन है साधे।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परम्परा में शुक्ल पूर्व अनौपचारिक लेखन में नाथादास का महत्त्वपूर्ण योगदान है, उन्होंने भक्तमाल नामक ग्रंथ की रचना की।

नाभादास रचित भक्तमाल मुख्यः भक्त कवियों से संबंधित है, जिसमें लगभग 200 भक्त कवियों के जीवन संकलन तथा छंदों को संगृहित किया है।

भक्तमाल में कबीर, तुलसी, रैदास जैसे भक्त कवियों के छंद संकलित है। जिनका मूल उद्देश्य भक्त परम्परा को जीवित रखना था।

इस ग्रंथ में भक्तों के जीवन की चमत्कारिक घटनाओं को भी संकलित किया है, ताकि भक्ति की परम्परा जीवित रहे। यह ग्रंथ काल क्रम के अनुसार नहीं है बल्कि एक आंकड़ो के संग्रह की भाँति है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस ग्रंथ का महत्व यह है कि यह साहित्येतिहास लेखन का सबसे प्राचीन स्रोत के रूप में उपस्थित है।

भक्तमाल से प्रारंभ हुई साहित्येतिहास लेखन की परम्परा गार्सा द तासी तथा जार्ज ग्रियर्सन से होते हुये शुक्ल जी पर पूर्णता को प्राप्त करती है, जिससे द्विवेदी जी तथा चतुर्वेदी जी ने नवीन आयाम प्रदान किये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) केशवः कठिन काव्य के प्रेत

केशवदास भक्तिकाल तथा रीतिकाल दोनो में समान रूप से महत्वपूर्ण है किन्तु उनका अधिक महत्त्व रीतिकाल के प्रवर्तक (डॉ. नगेन्द्र) के रूप में अधिक है।

उनके द्वारा कविप्रिया, रामचन्द्रिका जैसे ग्रंथों का लेखन किया है, जो अनेक प्रकार की मौलिकताओं से युक्त है किन्तु केशव के संबंध में कहा जाता है कि वे कठिन काव्य के प्रेत है

वस्तुतः यह आक्षेप उनके व्यक्तित्व तथा काव्य रचना दोनो आधारों पर सही प्रतीत होता है। व्यक्तित्व की दृष्टि से वे कई चरित्रों कवि, साहित्यकार, विज्ञानकार आदि कई रूपों को एक साथ साध लेना चाहते है

वही काव्य के स्तर पर उनके काव्य में अनेक दोष दिखाई देते है, जिसमें पद-न्यूनता तथा शब्द-न्यूनता की प्रवृत्ति है।

जैसे - " सी | धी | री | धौ |
~~स्वरूप~~ राम | नाम | सत्य | धाम || "

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

केशव के काव्य में कठिनता का स्तर उनके संस्कृत के पृष्ठभूमि से जुडे होने के कारण तो है ही, साथ ही मार्मिक तत्वों को न पहचानना तथा संबंध निर्वाह का न होना भी उनके काव्य को कठिन बनाता है।

आचार्य शुक्ल ने उनकी रामचन्द्रिका के संबंध में कहा है कि " संबंध निर्वाह न होना तथा मार्मिक स्थलों की पहचान का अभाव उनकी रामचन्द्रिका को रामचरितमानस की भांति लोकग्राही न बना सका।

उनके द्वारा प्रयुक्त अलंकार वैविध्य तथा छंद वैविध्य ने भी उनके काव्य को कठिनता प्रदान की है।

~~स्प~~ सारांशत: स्पष्ट है कि केशव कठिन काव्य के प्रेत कुछ सीमा तक कहे जा सकते हैं किन्तु हिन्दी साहित्य में उनका योगदान अविस्मरणीय है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) विद्यापति की राधा

राधा भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में सर्वाधिक चर्चित व्यक्तित्व रहा है, जो महाभारत से लेकर वर्तमान तक (अनुप्रिया) परिवर्तित रहा है।

विद्यापति ऐसे कवि है, जिन्होंने कृष्ण के सम्मुख सिरे पर रख दी गई राधा को कृष्ण के समान महत्व प्रदान किया।

उन्होंने राधा के सौंदर्य का अनुपम वर्णन किया, जैसा वर्णन जायसी के यहाँ पद्मावती का उपस्थित है।

" जहँ-जहँ पग धरहि ××× तहँ तहँ बिजुरी तरंग।"

विद्यापति की राधा का सौंदर्य इतना अनुपम है कि कृष्ण भी उनसे मिलने को आतुर रहते है।

बाहरी सौंदर्य से युक्त राधा का आंतरिक सौंदर्य अधिक प्रभावशाली है। उनका हृदय कृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करता है और कृष्ण की छवि को वह 'अपरूप' की भाँति मानती है, जो केवल स्वप्न में ही दिखाई देती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" जनम अवधि भर रूप निहारल,
नयन न तिरपित भेल।"

~~कृष्ण~~ राधा का प्रेम सच्चा एवं एकनिष्ठ होने के कारण कृष्ण जब मथुरा नगरी में रहते है, तो उनके कृष्ण में विरह शृंगार का तत्व रहता है, जो विद्यापति के कृष्ण - राधा को सूर के कृष्ण- राधा से अलग करता है-

" राहि रहल हम दुर मथुरापुर
एतहुँ सदर प्राम।"

सारांशतः स्पष्ट है कि विद्यापति की राधा एक बाहरी एवं आंतरिक सौंदर्य की प्रतिमूर्ति है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिये। 10

भारतेन्दु सजग सामाजिक- राष्ट्रीय चेतना के कवि है। जिनके साहित्य में राष्ट्रीयता की समकालिकता वर्तमान के सदृश दिखाई देती है।

इसी समकालिकता को पुष्ट करने वाली रचना है अंधेर नगरी। इस नाटक का मूल भाव शासक वर्ग की निष्क्रियता, प्रशासनिक भ्रष्टाचार तथा जनता पर टैक्स की मार है।

साथ ही भारतेन्दु ने अनेक प्रसंगों के माध्यम से धन के प्रभाव को भी दर्शाया है, जो वर्तमान में भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण है।

प्रशासनिक भ्रष्टाचार तथा टैक्स की मार के संदर्भ में वे लिखते है कि प्रशासन ने जनता पर बहुत अधिक कर आरोपित कर रखा है।

" चना हाकिम सब जो खाते
सब पर दूना टिकस लगाते।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

" चूरन पुलिस वाले जो खाते,
सब कानून हजम कर जाते।"

धन के प्रभाव को भी वे धन के प्रभाव में जाति बेचने की स्थिति से स्पष्ट करते है। "एक टका दो हम अभी अपनी जात बेचे। धन के वास्ते ब्राह्मण से मुस्लिम।"

उक्त सभी प्रशासनिक विद्रूपताएँ वर्तमान में भी उपस्थित है। जहाँ प्रशासक वर्ग जनता को कानूनी जाल में फसाकर शोषण कर रहा है।

वही धन के स्वीकरण ने भ्रष्टाचार को सामाजिक महत्त्व प्रदान किया है। जाति व्यवस्था की कुप्रथा पुन: अपना रंग जमाने लगी है तथा शासक वर्ग किंकर्त्तव्यविमूढ़ स्थिति है।

सारांशत: स्पष्ट है कि अंधेर-नगरी नाटक पर्याप्त प्रासंगिकता के साथ वर्तमान में उपस्थित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति पर प्रकाश डालिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महादेवी वर्मा छायावादी युग की प्रमुख कवयित्री है. जिनके काव्य में छायावादी विषयों की के साथ पलायनवाद तथा विरह का भाव उपस्थित है।

वस्तुतः महादेवी वर्मा ने स्वयं लिखा है कि - आज का रचनाकार अपने जीवन के साहित्य में उतार देना चाहता है।

छायावादी काव्य स्वातंत्र्य चेतना का काव्य है. ये कवि समाज में स्वतंत्रता चाहते है किन्तु समाज इसे स्वीकार नहीं करता। जिसके कारण संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है।

यह संघर्ष पलायन तथा विरह में तब्दील हो जाता है. जो विरह की आसक्ति से युक्त है। महादेवी वर्मा ने लिखा है कि

" मिलन का मत नाम लो.
मैं विरह में चिर हूँ।"

विरह की यह स्थिति धीरे - धीरे पलायन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

में परिवर्तित हो जाती है। जहाँ सामाजिक बंधनों की जकड़न से दूर जाकर अपने प्रियतम से मिलन को महसूस करती है.

" मेरे प्रियतम को भाता है।
तम के पर्दे में आना।

महादेवी की विरह वेदना का चरम स्तर तब दिखाई देता है, जब वे अपने अकेलेपन को काम्य मानती है और इस विरह के लिए प्राण देने की बात कहती है-

" मेरे इस जीवन की मैं हूँ रानी मतवाली
प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली।"

सारांशतः स्पष्ट है कि स्वतंत्र चेतना से विरह एवं पलायन का भाव महादेवी के काव्य की विशेषता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मुक्त छन्द' की अवधारणा पर प्रकाश डालिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्त छंद सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा प्रयुक्त छंद है। अर्थात् छंद का ऐसा रूप जो साहित्यिक बंधनों को स्वीकार न करे।

स्वयं निराला ने मुक्त छंद के संदर्भ में लिखा है - मुक्त छंद वह है, जो छंद के धरातल पर रहकर भी मुक्त रहे।

वे मुक्त छंद के संदर्भ में कहते हैं कि वैदिक काल में स्वयं विधाता ने मुक्त छंद (रबर छंद) का प्रयोग किया है।

उनका मानना था कि छंदानुसार भावों की बजाय भावानुसार छंद होने चाहिए ताकि कविता अधिक प्रभावी तथा संवेदना-मय है।

मुक्त छंद का प्रयोग छायावादी काल में बढ़ने का एक कारण यह भी था कि छायावाद का विकास होने से अब कविता पाठ्य की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विधा बन गई थी, जिसमें छंदों का प्रयोग अधिक महत्व नहीं रखता था।

चूंकि निराला किसी विचारधारा में बंधने की बजाय स्वयं अपने आधार पर नवीन तत्व सृजित करते है।

जिस प्रकार राम की शक्तिपूजा में छायावाद तथा कुकुरमुत्ता में प्रगतिवाद का खंडन करते है। उसी तरह मुक्त छंद के द्वारा सामाजिक जड़ताओं पर प्रहार करते है।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't w
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी कहानी में नारी विमर्श की सशक्त हस्ताक्षर कृष्णा सोबती है। उन्होंने हिन्दी में नारी लेखन की दिशा एवं दशा दोनों में परिवर्तन किया।

उनका मानना था कि ~~स्वयं~~ संवेदना चाहे कितनी भी गहरी हो, स्वयंवेदना का स्थान नहीं लेती। इसलिए नारी लेखन का मूल स्वरूप केवल नारी द्वारा प्रकट किया जा सकता है।

उन्होंने 'मित्रो मरजानी' के द्वारा एक नवीन प्रवृत्ति को जन्म दिया, जिसके द्वारा नारी पर लादी गई यौन वर्जनाओं की पुनर्व्याख्या की।

उन्होंने पितृसत्तात्मक समाज के मुँह पर एक तमाचा मारने वाली चरित्र सुमित्रा (मित्रो) के द्वारा नारी की यौन चेतना को सहजता पूर्वक स्वीकार किये जाने की वकालत की।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उनका प्रमुख कहानी संग्रह है- बादलों के घेरे। इस संग्रह में उन्होंने तीन वर्ग की कहानियों का संकलन किया है।

प्रथम वर्ग में रोमांटिक प्रेम तथा छायावादी प्रेम जैसी अनुभूति वाली कहानियाँ है। जैसे- बादलों के घेरे, दो राहें.. दो बाहें, कभी नहीं- कुछ नहीं आदि।

दूसरे वर्ग में नारी मुक्ति की प्रेरणा से युक्त कहानियाँ है, जिनमें 'बदली बरस गई', 'आजादी शम्भो जान की', गुलाब जल गंडेरिया' प्रमुख है,

तीसरे वर्ग में उन्होंने साम्प्रदायिकता से मुक्त कहानियों का संकलन किया है। जैसे- डरो नहीं, मैं, तुम्हारी रक्षा करूँगा।

हिन्दी कहानी को न केवल विषय वस्तु बल्कि भाषा के आधार पर पंजाबी मिश्रित हिन्दी का रूप प्रदान किया। उनका योगदान अविस्मरणीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच के विकास में हिन्दी के प्रमुख रंग-निर्देशकों के योगदान पर प्रकाश डालिए। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी रंगमंच का विकास स्थानीय तत्वों (माच, ख्याल, बहुरुपिया) से होते हुये पारसी रंगमंच से प्रभावित होते हुये परिपक्वता धारण करता है।

स्वतंत्रता के पश्चात समकालीन हिन्दी रंगमंच के विकास में इब्राहिम अल्काजी का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने रंगमंच के विकास में निर्देशक की भूमिका को महत्व दिया।

~~उन्ह~~ उन्होंने पश्चिमी अनुदित नाटकों के रंगमंच के साथ-साथ स्थानीय नाटकों के मंचन को भी महत्व दिया।

उनके पश्चात डॉ. नगेन्द्र ने हिन्दी के लिए विशिष्ट रंगमंच की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि "हिन्दी रंगमंच को हमारी आकांक्षाओं का प्रतिबिम्बन करना चाहिए।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कालान्तर में तकनीकी विकास ने स्थानीय रंगमंच को अधिक मजबूत आधार प्रदान किया। जिससे स्थानीय नाटकों का मंचन बेहतर ढंग से संभव हो पाया।

नुक्कड़ नाटकों का मंचन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही, क्योंकि सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण आधार बने।

सारांशतः स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के पश्चात् भी हिन्दी रंगमंच का पर्याप्त विकास हुआ, जिसमें इब्राहिम अल्काजी की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't w
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7. (क) पृथ्वीराजरासो के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 10

महाकाव्य की पारम्परिक अवधारणा से तात्पर्य ऐसी रचना जो चारो पुरुषार्थों का समावेश करती हो, सर्गों की संख्या आठ से अधिक हो तथा नायक धीरोदात्त हो।

इन कसौटियों पर कसने पर पृथ्वीराजरासो में महाकाव्यत्व के गुण नजर आते है। क्योंकि वह एक उच्च कुल में जन्म लेने वाला धीरोदात्त नायक है। वह अपने प्रेम की प्राप्ति के लिए मृत्यु तक से भय नहीं खाता।

सर्गों की अवधारणा के आधार पर भी यह एक पर्याप्त रूप से कसौटी पर खरा उतरता है इसमें 68 सर्ग है। चन्दबरदाई ने छंदों का वैविध्य भी प्रस्तुत किया है। जो इसके महाकाव्यत्व का समर्थन करता है।

इसमें चारो पुरुषार्थों का भली प्रकार से वर्णन किया गया है, जिसमें चन्दबरदाई ने जीवन के विभिन्न प्रसंगो को उठाया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अतः महाकाव्यत्व की पारम्परिक परिभाषा के आधार पर यह महाकाव्य के स्थान को धारण करता है।

आधुनिक परिभाषा के आधार पर उदात्त कार्य, उदात्त भाव, उदात्त ~~कुछ~~ शैली, उदात्त चरित्र की सीमाओं पर कसने पर यह महाकाव्य के गुण धारण नहीं करता।

इसी प्रकार यदि पृथ्वीराजरासो को एक महाकाव्य माना जाये, तो किस प्रकार का महाकाव्य होगा। चूँकि इसमें स्थितियों का अधिक वर्णन है। अतः इसे स्थिति प्रधान महाकाव्य माना जाना बेहतर होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चंद्रगुप्त नाटक में निहित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का अनावरण कीजिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद सजग सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना के रचनाकार है। उनके साहित्य में राष्ट्रीयता की धारा अविरल बहती है।

चन्द्रगुप्त नाटक के लेखन का उद्देश्य तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन को समर्थन देना था। अत: स्वाभाविक ही है कि इसमें राष्ट्रीयता का भाव है।

वे नाटक के माध्यम से यवन सेना पर चन्द्रगुप्त की सेना को प्रभावी दिखाते हैं, वहीं चाणक्य को अरस्तु से बेहतर सिद्ध करते हैं।

चूंकि नवजागरण चेतना का भाव होने से आत्मगौरव की भावना इस नाटक में उपस्थित है। जब कार्नेलिया आर्यावर्त की प्रशंसा करती है -

"विश्व के अन्य राष्ट्र मानवों की भूमि है। यही भारत मानवता की जन्म भूमि है।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वे तत्कालीन सम्प्रदायवाद की समस्या को दूर करने के लिए ब्राह्मण- बौद्ध समन्वय के द्वारा हिन्दू- मुस्लिम समन्वय पर बल देते है- "यवन आक्रमणकारी ब्राह्मण तथा बौद्ध का भेद न करेंगे।"

क्षेत्रवादी भावना का विरोध करते हुये उन्होंने अखण्डता पर बल दिया। चाणक्य के कथन से स्पष्ट है- मागध और मालव को भूलकर जब तक सम्पूर्ण आर्यावर्त का नाम नहीं लोगे, तब तक वह नहीं मिलेगा।

उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन को जोश प्रदान करते हुये न केवल विदेशी पात्रों से प्रशंसा कराई बल्कि ओजगुण से युक्त कविताओं का समावेश भी किया.

"हिमाद्रि तुंग शृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यास का अनुशीलन कीजिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्त्री विमर्श का आगमन यूँ तो प्रेमचन्द के उपन्यासों में दिखाई देता है, जब उन्होंने स्त्री की पीड़ा को उपन्यास में उभारा, किन्तु वास्तविक स्त्री-विमर्श का आगमन नारी लेखकों के बाद हुआ।

इस कड़ी में कृष्णा सोबती सर्वप्रमुख रचनाकार है, जिन्होंने मित्रो मरजानी के द्वारा एक सशक्त उपन्यास को लिखा।

स्त्री-विमर्श से संबंधित लेखिकाओं ने नारी पर लादी गई यौन वर्जनाओं पर प्रहार किया। उन्होंने नारी की सहजता पर बल दिया और उसी सहज रूप को लेखन में प्रकट किया।

कृष्णा सोबती - मित्रो मरजानी

मन्नू भंडारी - महाभोज, आपका बंटी

नारी लेखन का आगमन हिन्दी उपन्यास के लिए विषयगत नवीनता तथा संवेदनागत गहराई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से युक्त रहा क्योंकि इससे पूर्व संवेदना भले ही गहरी हो, किन्तु स्वयंवेदना की तुलना में कमतर थी।

नारी लेखकों ने स्त्री की स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, निर्णयन क्षमता, राजनीतिक महत्वाकांक्षा आदि स्त्री विषयों को लेखनी का आधार बनाया।

सारांशतः स्पष्ट है कि प्रेमचन्द से प्रारंभ हुआ स्त्री विमर्श जैनेन्द्र से गुजरते हुये नारी लेखकों द्वारा पूर्णता को प्राप्त करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रीतिकाव्य पर ललित कलाओं का प्रभाव किन रूपों में दिखाई पड़ता है? विवेचना कीजिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिकाव्य मूलतः शृंगारिक चेतना एवं कलात्मक सौंदर्य का काव्य है। ये कवि दरबारी है अतः ललित कलाओं को साहित्य का अंग बनाकर चमत्कारित करते है।

ललित कलाओं का आधार देखे तो एक कवि द्वारा काव्य का उद्देश्य ही कला को माना है। उन्होंने लिखा है कि -

" तंत्रीनाद, कवित्त रस, सरस राग रति रंग
अनबूडे बूडे तिरे, जे बूडे सब अंग।"

कला एवं काव्य का समावेश रीतिकाल की प्रमुख विशेषता रही है। चूंकि यह काव्य मूलतः अनुभाव आधारित काव्य है, जो सहज प्रवृत्तियों को भी काव्य का हिस्सा बनादेता है।

बिहारीलाल के काव्य में यह प्रवृत्ति अधिक है. जिन्होंने अनुभावों की सटीकता को काव्य कला से संबद्ध किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

" बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय,
सौंह करे, भौंहनु हँसे, देन कहे नटजाय।"

~~रीति मुक्त~~ का।

रीतिकालीन कवियों ने नारी के दैहिक सौंदर्य की कलात्मक अभिव्यक्ति की है। उन्होंने कला के समान प्रत्येक सूक्ष्म वस्तु एवं विषय को अपने काव्य में समाहित किया। उनके द्वारा प्रयुक्त नारी सौंदर्य के उपमान ललित कला का आभास कराते है।

" अंग - अंग नग जगमगति,
दीप शिखा सी देह,
दिया बुझायो ही रह्यो,
बडो उजेरो गेहो।"

सारांशत: स्पष्ट है कि रीतिकालीन काव्य ललित कलात्मक सौंदर्य को प्रतिबिंबित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 10

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में मनोवैज्ञानिक विचारधारा का विकास प्रेमचन्द पश्चात युग में दिखाई देता है. जहाँ जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी तथा अज्ञेय जैसे उप-न्यासकार उपस्थित है।

मनोवैज्ञानिक विचारधारा पर फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद अर्थात् लिबिडो (काम चेतना) का प्रभाव दिखाई देता है।

इन लेखकों ने बाहरी विषयों को जकड़ करने की बजाय आंतरिक विषयों एवं अन्तर्द्वंद को उभारा है।

इनके उपन्यासों में सामाजिक तथा वैयक्तिक द्वंद स्पष्टतः दिखाई देता है+ त्यागपत्र की मृणाल कहती है- "देखो चिड़िया कितना डर डर जाती है मैं चिड़िया होना चाहती हूँ ××× मैं समाज को तोड़ना नहीं चाहती। समाज डूटा कि हम बनेंगे किसके भीतर।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मनोवैज्ञानिक विचारधारा की विषय - वस्तु - अधिक प्रतीकात्मक एवं विश्लेषण प्रधान होने के कारण भाषा भी बेहद प्रतीकात्मक हो जाती है।

इन लेखकों के नारी पात्र ~~सतीत्व~~ सतीत्व के धरातल पर पवित्र होकर भी नैतिकता के धरातल पर अपवित्र रहते है। मृणाल कहती है- "तन देने की जरूरत मैं समझ सकती हूँ। तन दे सकूँगी। दान स्त्री का धर्म है।"

मनोवैज्ञानिक विचारधारा के प्रमुख उपन्यास निम्न है -

जैनेन्द्र - त्यागपत्र, परख, कल्याणी

इलाचन्द्र - जहाज का पंछी, रंगीला

अज्ञेय - नदी के द्वीप, शेखर: एक जीवनी, अपने-अपने अजनबी।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में निहित 'राष्ट्रीयता की चेतना' पर प्रकाश डालिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation